सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चित्रण

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं"

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकायान्तर्गत हिन्दी विषय में

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ० रवि प्रकाश मिश्र

शोधार्थी

राजरानी

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,

जयपुर, (राजस्थान), भारत

सत्र २०२०-२१

SYNOPSIS

1. शीर्षक *(Title of The Thesis)* **:**

सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चित्रण

2. प्रस्तावना ***(Introduction) Given Purpose of Research :***

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तथा पश्चात् देश में कई क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। राष्ट्र एक ओर विकास के पथ पर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था, तो दूसरी ओर समाज में जीवन मूल्यों का विघटन भी प्रारम्भ हो चुका था। स्वतत्रंता के पश्चात् नारी के जीवन में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आए।

जिसमें समाज का एक वर्ग धर्मान्धता की आड़ में जीवन जी रहा था। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री की मनोदशा को समझना बहुत ही मुश्किल था। ऐसे मुश्किल दौर में महान साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार का आविभार्व हुआ। जिनकी अमूल्य निधि स्त्री के अस्तित्व की पहचान का विशेष आग्रह था। जिनका जीवन और साहित्यिक परिचय शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

जैनेन्द्र कुमार संक्षिप्त परिचय–

व्यक्तित्वः

- जन्म 2 जनवरी, 1905 में कौडियागंज (जिला–अलीगढ़), उत्तर प्रदेश में।
- मूल नाम– आनंदीलाल।
- सम्पूर्ण साहित्य पर अन्तर्मन और सूक्ष्म भावों के साथ सामंजस्य।
- हिन्दी में प्रेमचन्द के बाद सर्वाधिक प्रतिष्ठित कहानीकार।
- मनोवैज्ञानिक विचारक व विश्लेषणकार। हिन्दी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा–धारा का प्रवर्तन।
- गांधीवाद में आस्था रखने वाले साहित्यकार।
- 1970 ई. में पद्‌मभूषण से सम्मानित।
- साहित्य अकादमी व भारत–भारती पुरस्कार से सम्मानित।

कृतित्व :

- **कहानी साहित्य–** वातायन (1930 ई.), नीलम देश राजकन्या (1933 ई), एक रात (1934 ई.), दो चिड़ियाँ (1935 ई.), पाजेब (1942 ई.), जयसंधि (1949 ई.), आत्मशिक्षण, खेल, अपना–अपना भाग्य, तत्सत्।

- **उपन्यास साहित्य–** परख (1929 ई.), सुनीता (1935 ई.), त्यागपत्र (1937 ई.), कल्याणी (1939 ई.), विवर्त (1953 ई.), सुखदा (1953 ई.), व्यतीत (1953 ई.), जयवर्धन (1956 ई.), मुक्तिबोध, अनाम स्वामी, तपोभूमि।
- **निबंध साहित्य–** प्रस्तुत प्रश्न (1936 ई.), जड़ की बात (1945 ई.), पूर्वोदय (1951 ई.), साहित्य का श्रेय और प्रेय (1953 ई.), मंथन (1953 ई.), सोच–विचार (1953 ई.), काम, प्रेम और परिवार (1953 ई.), समय और हम, इतस्ततः साहित्य चयन, विचार वल्लरी, दूर और पास, विसर्जन, की शक्ति।
- यात्रा–संस्मरण– ये और वे (1954 ई.), कश्मीर की वह यात्रा, गांधीः कुछ स्मृतियाँ आदि।
- जैनेन्द्र कुमार के कथा साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता हैं– ***स्त्री के अस्तित्व की पहचान का आग्रह।***

यथार्थ को अंतिम सत्य के रूप में ओढ़कर जो अपने को विवश मान बैठ सकता है, वही तो असमर्थ है। पर जिसने स्वप्न के सत्य के दर्शन किए वह यथार्थ की विकटता से कैसे निरूत्साहित को सकता है।

हिन्दी में प्रेमचंद के बाद सबसे महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित जैनेन्द्र कुमार का अवदान बहुत व्यापक और वैविध्यपूर्ण है। अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से उन्होंने हिन्दी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा–धारा का प्रवर्तन किया। परख और सुनीता के बाद 1937 ई. में प्रकाशित त्यागपत्र ने इन्हें मनोवैज्ञाानिक उपन्यासकार के रूप में प्रभूत प्रतिष्ठा दिलाई। इसी तरह खेल, पाजेब, नीलम देश की राजकन्या, अपना–अपना भाग्य ओर तत्सत जैसी कहनियों को भी कालजयी रचनाओं के रूप में मान्यता मिली है।

कथाकार होने के साथ–साथ जैनेन्द्र कुमार की पहचान अत्यंत गंभीर चिंतक के रूप में रही। बहुत सरल एवं अनौपचारिक–सी दिखने वाली शैली में उन्होने समाज, राजनीति, अर्थनीति एवं दर्शन से संबंधित गहन प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश की है। अपनी गांधीवादी चिंतन–दृष्टि का जितना सुष्ठु सहज उपयोग व जीवन–जगत से जुड़ें प्रश्नों के संदर्भ में करते है।

प्रत्येक युग की रचनाओं को यद्यपि किसी एक निश्चित प्रवृत्ति के अन्तर्गत रखना एक कठिन कार्य है। उनके उपन्यासों को शोध कार्य की दृष्टि से निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैः–

1. सामाजिक उपन्यास।

2. मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास।

3. ऐतिहासिक उपन्यास।

4. आंचलिक उपन्यास।

5. सेक्स (पौन) आधारित उपन्यास।

3. शोध कार्य का महत्व *(Importance of research work) :*

विश्व में प्रत्येक वस्तु का महत्व है। इसलिए किसी भी चीज को नजर अन्दाज नहीं कर सकते, फिर यह तो मानव समाज का अभिन्न और महत्वपूर्ण अंग नारी चित्रण की बात हैं। इस दृष्टि से इस विषय का शोध परख अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। नारी के बिना नर अधूरा है। नारी विहीन मानव समाज की कल्पना संभव नहीं है। प्राचीन काल में कोई भी शुभ कार्य उसकी अनुपस्थिति में सम्पन्न नहीं हो सकता था। नारी पुरूष की अर्धागंनी है, लेकिन परिस्थितिवश आये परिवर्तनों से नारी अधिकारहीन और पराधीन बन गई।

समाज के आंतक से भारतीय नारी का जीवन अत्यन्त हेय और उपेक्षित बन गया था। परिवार और समाज नारी के प्रति क्षुब्ध थे। अपनी सहचरी को

पुरूष चारदिवारी के भीतर परदों में छिपाये रखता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में शिक्षा के विकास एवं नारी उत्थान के लिए प्रयास किये गये।

जिसके परिणाम समाज में स्पष्ट दिखाई देने लगे। शिक्षा के कारण ही नारी जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी शक्ति और अधिकारों के प्रति सजग हो गई। दूसरी ओर आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भार होने के लिए नौकरी करने लग गई। समाज में नारी के जीवन में आये इस बदलाव में वैज्ञानिकता का रूप देखने के मिलता है। जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिख गया साहित्य जिसमें उपन्यास और कहानी महत्वपूर्ण हैं। उनके जीवन साहित्य की विशेषता रही है। उनके साहित्य में नारी कभी समझौता करती है तो कभी विद्रोह। उन्होंने समाज में नारी का यथार्थ चित्रण किया है। साहित्य में नारी को पुरूष के समकक्ष दिखाने का प्रयास किया हैं।

अतः आज आवश्यकता इस बात की है की नारी को देश के समस्त क्षेत्रों से जोड़ा जायें, जिससे वह अपनेपन का बोध कर सकें। इस दृष्टि से प्रस्तावित विषय अति महत्वपूर्ण है। जिससे इसका महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता ही जायेगा।

प्रस्तावित शोध कार्य इस कमी को पूर्ण करने का प्रयास करेगा। मेरी जानकारी में *"सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चित्रण"* पर किया गया शोध कार्य नया होगा।

4. शोध कार्य की परिकल्पनाएँ *(Hypothesis of research work) :*

उपन्यास और कहानी को एक लोकप्रिय साहित्यिक विधा का उल्लेखनीय गौरव प्राप्त हुआ है। सामान्य शिक्षित जन मनोरंजन के लिए इन साहित्यिक विद्याओं को पढ़कर रसानुभूति प्राप्त करते हैं। इस प्रकार कहानी और उपन्यास के माध्यम से व्यक्ति समाज एवं उसकी वर्तमान स्थिति का चित्रण कर सकता है, इस विषय का अध्ययन करने में यह विधा उपयोगी सिद्ध हो सकेगी—ऐसा मेरा मानना हैं।

मैंने स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम में अनेक हिन्दी कथा व कथाकारों का अध्ययन किया। जिनके कथा साहित्यों में विचारात्मक, भावात्मक, व्याख्यानात्मक और विवेचनात्मक आदि शैलियों का अध्ययन भी किया। इस प्रकार मेरे ह्दय में अनेक कथा साहित्यकारों के बारे में पढ़ने की रूचि जाग्रत हुई। इसलिए मैंने शोध विषय के लिए ***"सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक***

परिप्रेक्ष्य में जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चित्रण" लिया जो मेरे अध्ययन का एक सहज विकास कार्य है।

5. **शोध कार्य का उद्देश्य** ***(Purpose of the research work) :***

शिक्षा एवं स्वतंत्रता के अभाव के कारण स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय रही है। साहित्य में नारी चित्रण सर्वकालिक विषय रहा है। प्रस्तावित शोध के उद्देश्य को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा प्रकट किया जा सकता है।

1. समाज में नारी को स्वयं के प्रति जागरूक कराना।
2. समाज व विज्ञान बोध के अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा को समझाना।
3. समाज को नारी की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराना।
4. वर्तमान समय में नारी की संघर्ष पूर्ण स्थिति को वर्णित करना।
5. नारी को मनोवैज्ञानिकता का बोध करना।
6. पुरूष प्रधान समाज में नारी को उत्पीड़न एवं शोषण से मुक्त कराना।
7. नारी को नारी उत्थान के लिये प्रेरित करना।
8. महिलाओं में नव चेतना का विकास करना।
9. स्त्रियों में आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना।
10. पाठकों को जैनेन्द्र कुमार के कथा साहित्य से परिचित कराना।

हिन्दी में मानव के असामान्य व्यवहार की मानसिक प्रतिक्रियाओं को विश्लेषित किया है। इसलिए मैंने ”सामाजिक उपं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चित्रण” विषय का चयन किया।

जैनेन्द्र का हिन्दी साहित्य के औपन्यासिक क्षेत्र में आना एक घटना है। उनके साथ ही हिन्दी उपन्यास अपनी क्रमागत परम्परा से विच्छित हो जाता है। सर्वथा एक नयी दिशा की ओर मुड़ जाता है। यह दिशा वैज्ञानिकता की सशक्त दिशा है। वे हिन्दी के पहले आधुनिकतावादी कथाकार हैं। उनके पूर्ववर्ती और समकालीन उपन्यास विशिष्ट सामाजिक संस्था के थे। कोई यथार्थवादी था तो कोई आदर्शवादी। उनमें घटनाओं, आन्दोलनों और सामाजिक विकृतियों की प्रमुखता थी। कथानक, चरित्र–चित्रण, देशकाल और वर्णन आदि की दृष्टि से वे एकरूप थे।

जैनेन्द्र ने उपन्यास का ऐस्थेटिक्स ही बदल दिया। उपन्यास स्वयं में अधिक स्वायत्त हो मया। उनका उपन्यास समाज या व्यक्ति को बदलने का दावा नहीं करता और न ठोस भौतिक पदार्थों से उनका कोई नाता होता है। उसकी नयी भाषिक संरचना, काव्यात्मकता और प्रतीक–विधान, काल चेतना आदि में जो परिवर्तन आया उसे षट्तत्ववादी सिद्धान्तों से नही पखा जा

सकता। सब मिलाकर वह एक पैटर्न बनाता है जिसमें परिस्थितिगत व्यक्ति चिंतनग्रस्त होकर अन्तर्मंथन करता है। परम्परित उपन्यासों में व्यक्ति या समूह समाज से लड़ता है तो जैनेन्द्र के उपन्यासों के व्यक्ति अपने से लड़ते हैं। उनमें स्थूल सामाजिक, नैतिक संघर्ष के स्थान पर आत्मस्थ नैतिक संघर्ष और जटिल मानसिकता मिलती है। इस तरह की विषयवस्तु लेकर लघु उपन्यास ही लिखे जा सकते है।

उन्होंने अनेक उपन्यासों की रचना की है जिसमें परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त और दशार्क आदि। इनमें से मुख्य उपन्यास तीन हैं– परख, सुनीता और त्यागपत्र। शेष उपन्यास उन्हीं के एक्सटेंशन है।

6. शोध के लिए प्रस्तावित विधि *(Proposed Methodology during the tenure of the Research Work)* :

इस अध्ययन में मैंने सर्वेक्षण प्रणाली को न अपना कर जैनेन्द्र कुमार के प्रत्येक उपन्यास और कहानी को स्पष्ट करने के लिए विचारात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक और आत्मपरक शैली को अपनाया जाएगा। जैनेन्द्र कुमार की सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक शैली प्रमुख रही है। अपनी रचनाओं में नई अर्न्तदृष्टि, संवेदनशीलता और दार्शनिकता का भी

परिचय दिया है। जैनेन्द्र अन्तर्द्धन्द के द्वारा मानवीय उदात्त भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति करते है।

जैनेन्द्र कुमार का अधिकांश साहित्य 20वीं सदी के अंत ओर 21वीं सदी के प्रारंभ में लिखा गया है। अतः सर्वप्रथम उनके साहित्य का संकलन किया जायेगा। तत्पश्चात् उसका अध्ययन करके उसे अध्यायों में वर्गीकृत कर विश्लेषित किया जायेगा। जीवित रचनाकारों से मिलकर उनकी कृतियों के संदर्भ में साक्षात्कार लिया जायेगा। जैनेन्द्र कुमार के व्यक्त्वि ओर कृतित्व का अध्ययन कर उनके वैज्ञानिक और शोधपरक ढ़ंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जायेगा। इस प्रक्रिया में परीक्षण किया जायेगा कि कौन सा रचनाकार इनके किस पक्ष पर अधिक लिखा रहा है, इस प्रकार जैनेन्द्र कुमार के साहित्य का सूक्ष्म अध्ययन करके विषय का विश्लेषण एवं शोध विषय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया जायेगा।

7. उपलब्ध साहित्य की समीक्षा (*Review of availabli literature*) :

हिन्दी उपन्यास साहित्य के इतिहास में प्रेमचन्द के बाद जैनेन्द्र कुमार सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं।

जैनेन्द्र कुमार हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में एक नई प्रवृति के पुरस्कर्ता हैं। प्रेमचन्दीय औपन्यासिक जीवन की बहिर्मुखता को त्यागकर हिंदी उपन्यास को मानव के अन्तरंग की ओर ले जाकर उसके सूक्ष्म स्पन्दनों के संत्रसनों से अपनी रचनाओं को प्राणान्वित करने वाले जैनेन्द्र विशिष्ट योगदन के द्वारा अपने को अलग रखते हैं।

जैनेन्द्र कुमार ने समाज के सभी पहलुओं पर दृष्टिपात किया है। उन्होने अपने साहित्य में सामाजिक रानैतिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक सभी विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। साथ ही उनमें आई गिरावट पतन, बुराई, को भी बखूबी उजागर किया है।

एक साहित्यकार समाज के अन्तः संघर्ष व उतार चढ़ावों को अपनी कृति के माध्यम से चित्रित करता है। साहित्य के द्वारा ही मानव जीवन के विविध रूपों घटनाओं, समस्याओं, भावों, विचारों व मानदंडों को अभिवयक्ति मिलती है।

जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नारी चरित्र की विशद् व्याख्या है। भारतीय भाषाओं में प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द्र के अतिरिक्त नारी चरित्र के विविध आयामों का विश्लेषण ओर किसी

उपन्यासकार ने किया तो वह जैनेन्द्र कुमार ही है जिन्होने नारी चरित्र को अधिकाधिक गहराई के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है।

जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चरित्र पूर्ण जागरण का प्रतीक है। यह समाज से पीडित भले ही हो लेकिन ऐसी कुंठित नही है कि रूग्न–वयक्तित्व का प्रतिनिधित्व करें। वह तो सदैव अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है वह संघर्ष से टूटती नही बल्कि और संगठित होकर समाज के सामने एक चुनौती बनकर खडी हो जाती है। जैनेन्द्र कुमार की नारियां अन्य उपन्यासकारों की नारियों से बिल्कुल ही अलग दिखाई देती हैं।

प्रस्तुत शोध में जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चरित्र के विविध आयामों को उद्‌घाटित किया गया है। हिंदी की उपन्यासकला को जैनेन्द्र कुमार ने विकास की नवीन दिशाएं ही प्रदान नही की, अपितु अभिव्यक्ति के सर्वोच्च क्षितिज का भी निर्माण किया है।

आज समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार होने के बावजूद भी नारी शोषण और उत्पीडन बढ़ रहा है। ऐसे में इस विषय का महत्व और भी बढ़ जाता है। आज नारी जिस उत्साह से नारी शोषण एवं उत्पीडन की समाप्ति

के लिए संघर्षरत है ऐसे में प्रस्तुत विषय नारी जगत में एक नई ऊर्जा का संचार कर सकता है।

8. शोध कार्य की प्रस्तावित अध्याय योजना *(Proposed chapter plan of Research Work)* :–

- **प्रथम अध्याय–** जैनेन्द्र कुमार : जीवन दर्शन।
- **द्वितीय अध्याय–** जैनेन्द्र कुमार का साहित्य : एक अध्ययन।
- **तृतीय अध्याय–** हिन्दी साहित्य में उपन्यासों का अध्ययन : एक परिचय।
- **चतुर्थ अध्याय–** सामाजिक आधार पर जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चित्रण।
- **पंचम अध्याय–** मनोवैज्ञानिक आधार पर जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चित्रण।
- **षष्ठ्म अध्याय–** जैनेन्द्र कुमार और उनके समकालीन उपन्यासकार।
- **उपसंहार**
- **संदर्भ–ग्रंथ सूची**

9. सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची *(Bibliography in Standard format)* :

(1) आधार ग्रंथ *(Foundation text)* :–

1. जैनेन्द्र कुमार, 'परख' 1929, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई।
2. जैनेन्द्र कुमार, 'सुनीता' 1935, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
3. जैनेन्द्र कुमार, 'त्यागपत्र' 1937, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
4. जैनेन्द्र कुमार, 'कल्याणी' 1939, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
5. जैनेन्द्र कुमार, 'विवर्त' 1953, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
6. जैनेन्द्र कुमार, 'सुखदा' 1953, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
7. जैनेन्द्र कुमार, 'व्यतीत' 1953, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
8. जैनेन्द्र कुमार, 'जयवर्धन' 1956, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
9. जैनेन्द्र कुमार, 'मुक्तिबोध' 1965, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
10. जैनेन्द्र कुमार, 'अनन्तर' 1968, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
11. जैनेन्द्र कुमार, 'अनामस्वामी' 1974, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
12. जैनेन्द्र कुमार, 'दशार्क' 1985, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।

(2) सहायक ग्रंथ *(Supporting text)* :-

1. जैनेन्द्र कुमार, "साहित्य का श्रेय और प्रेय" पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
2. डॉ0 जगदीश पाण्डेय, "कहानीकार जैनेन्द्र : अभिज्ञान और उपलब्धि",
   पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
3. डॉ0 देवराज उपाध्याय, " जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।
4. डॉ0 नीरजा राजकुमार, "समाज मनोविज्ञान के सन्दर्भ में जैनेन्द्र का कथा साहित्य", सूर्य प्रकाशन, दिल्ली।
5. परमानन्द श्रीवास्तव, "जैनेन्द्र के उपन्यास" लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. डॉ0 विमल सहान्त्र बुद्धे, "हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।
7. डॉ0 दिग्विजय कुमार शर्मा, "जैनेन्द्र के साहित्य में नारी"
8. यादव मंजू, "वर्तमान स्त्री का सच"
9. डॉ0 त्रिभुवन सिंह, "हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग"
10. डॉ0 गजानन शर्मा, "प्राचीन साहित्य में नारी"

11. डॉ0 मधुरेश, "कहानीकार जैनेन्द्र कुमार पुनर्विचार" नई दिल्ली।

12. प्रभा खेतान, "स्त्री उपेक्षिता" नई दिल्ली वाणी प्रकाशन।

13. सिंह मीनाक्षी निशांत, "महिला सशक्तीकरण का सच" नई दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन।

14. डॉ0 तिवारी कामिनी, " प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श" कानपुर : विद्या प्रकाशन।

15. डॉ0 गर्ग, "साठोतरी हिन्दी उपन्यासों में स्त्री" नई दिल्ली, सार्थक प्रकाशन।

16. डॉ0 ज्योति, " अमर हिन्दी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, कानुर : अत्रपूर्णा प्रकाशन।

17. डॉ0 घोरपडे. छाया देवी, "नारी जीवन मूल्य", कानपुर, विद्या प्रकाशन।

18. श्री चिरंजीलाल पाराशर, "नारी और समाज" नेशनल पब्लिशर्स।

19. श्रामदरश मिश्र, "हिन्दी उपन्यास : एक अर्न्तयात्रा" राजकमल प्रकाशन।

20. शशिगुप्त, "प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास : नए नैतिक मूल्य" राधा पब्लिकेशन।

21. नार्मन एल. मन., "मनोविज्ञान" राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली।

22. ममता शुक्ला, "मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन", जवाहर पुस्तकालय, मथुरा।

(3) शब्दकोश *(Dictionary)* :–

1. श्रीनवल जी नालन्दा : हिन्दी विशाल शब्द सागर।
2. डॉ रामस्वरूप रसिकेशं : आदर्श हिंदी संस्कृत कोश।
3. डॉ0 शिव प्रसाद शास्त्री : मानक हिंदी – हिंदी कोश।
4. सूर्यकांत : संस्कृत–हिंदी–इंग्लिश कोश।

(4) पत्र–पत्रिकाएँ *(Letter-Magazines)* :–

1. साक्षात्कार, मार्च 2005
2. अक्षर पर्व, नवम्बर 2008
3. आजकल, मार्च 2008
4. हंस, मार्च 2012
5. शोधक, मई–अगस्त 2010
6. दैनिक जागरण, जून 2010
7. दैनिक भास्कर, सितम्बर 2019

(5) Internet/wbsites :-

1. http://dict.hinkhoj.com/shabdkosh.php?/word.
2. http://www.hindibook.com/index.php?/p

शोध निर्देशक — **शोधार्थी**

डॉ० रवि प्रकाश मिश्र — **राजरानी**